

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीजगुरु सिंरय्यररिचितं  
॥ श्री लम्हीरेकटेश्वरभुजसुत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রী লক্ষ্মীরেক্ষটেশ্বরভূজঙ্গস্তোত্রম্ ॥

ভূজঙ্গাচলাগ্রস্বহেমালযান্তঃ -  
স্মুরনীলরত্নংরিষা রিগ্রহেণ।  
মুহূর্ভাসযন্তং সুখান্তং মহান্তং  
ভজে রেক্ষটেশং শ্রযে শ্রীনিরাসম্ ॥ 1 ॥

স্মুরদ্রত্নভাস্বৎকিরীটাভিরামং  
ললাটস্বকপূরচূর্ণোধ্রপুঞ্জম্।  
মনাঙ্ঘন্দহাসাধরোষ্ঠাস্যপদ্মং  
ভজে রেক্ষটেশং শ্রযে শ্রীনিরাসম্ ॥ 2 ॥

কৃপাপূর্ণসৌম্যেক্ষণাজ্জারলোকৈঃ  
নতানেকভূতৌঘরক্ষৈকদীক্ষম্।  
মণিস্তোমকান্তিচ্ছটাকর্ণপূরং  
ভজে রেক্ষটেশং শ্রযে শ্রীনিরাসম্ ॥ 3 ॥

করাগ্নোল্লসচ্ছ্ৰাচক্রায়ুধাত্যং  
রমারাসরম্যাযতোরোপ্রদেশম্।  
লসৎপীতরাসঃপ্রভারঞ্জিতাঙ্গং  
ভজে রেক্ষটেশং শ্রযে শ্রীনিরাসম্ ॥ 4 ॥

অনর্ঘস্মুরদ্রত্নভূষারিশেষৈঃ  
অনেকৈস্সদালঙ্কৃতং মঙ্গলাঙ্গম্।  
সুগন্ধিপ্রসূনারলিশ্রকুরম্যং  
ভজে রেক্ষটেশং শ্রযে শ্রীনিরাসম্ ॥ 5 ॥

পদাজং শ্রযধ্বং মমেত্যাदरेण  
 ब्रूराणं स्वभक्तान् करन्यासभङ्ग्या।  
 जगज्जन्मरम्भाङ्गयादिस्वलीलम्  
 भजे रेक्षटेशं श्रये श्रीनिरासम् ॥ 6 ॥

भराङ्किर्भरेज्जानुदङ्गं प्रितानाम्  
 इति र्याहरन्तं करेणापरेणा।  
 धृतार्चारतारं परं ब्रम्ह नित्यं  
 भजे रेक्षटेशं श्रये श्रीनिरासम् ॥ 7 ॥

पदाङ्गाप्रितानेकदेराधिपानां  
 किरीटसुरत्नप्रभाभासिताङ्घ्रिम्।  
 त्रिलोकैकनाथं त्रयीमौलिरेद्यं  
 भजे रेक्षटेशं श्रये श्रीनिरासम् ॥ 8 ॥

धनं भक्तलोकैरनेकैर्गृहीत्वा  
 तदीयां समस्तां रिपन्तिं निरार्य।  
 अभीष्टानि दत्त्वा समस्तानरन्तं  
 भजे रेक्षटेशं श्रये श्रीनिरासम् ॥ 9 ॥

नमः श्रीनिरासाय सराङ्तरान्मन्  
 नमस्तेहस्त पद्मारतीरल्लभाय।  
 नमो रेक्षटाद्रिस्फुरङ्कालमेघ  
 प्रपन्नार्तवक्त्रो नमस्तेहस्त नित्यम् ॥ 10 ॥

॥ इति श्री लक्ष्मीरेक्षटेश्वरभूजङ्गस्तोत्रं समाप्तम् ॥